मुक्ति

(पुस्तक के कुछ अंश)

मोहिनी हाथ में किताब 'सरिता' लेकर सोफे पर बैठ गई. उसकी नज़र उस पन्ने पर स्थिर हो गई . बीस साल पहले उसकी इस कहानी 'कृष्णवेणी'को उसके परोसी श्रीकांत सर ने प्रकाशित होने के लिए भेज दिया था .जिस दिन कहानी किताब में छपी श्रीकांत सर किताब ले कर उसके पास आए वह आँगन बहार रही थी .उनको देखते ही वह ठिठक गई और हाथ ज़ोर कर प्रणाम किया उन्होने आशीर्वाद देते हुए बोले मोहिनी बेटा तुम बहुत अच्छा लिखती हो चाहे कुछ हो जाए तुम लिखना मत बंद करना एक दिन तुम शिखर तक पहुँचोगी और हाथ में किताब देते हुए बोले इसमे तुम्हारी कहानी छपी हैन.इत्न सुनते ही उसकी आँख सजल हो गई उसने झट से श्रीकांत सर का चरण स्पर्श कर अपने माथे में हाथ लगा लिया..। आगे............

मोहिनी हाथ में किताब 'सरिता' लेकर सोफे पर बैठ गई. उसकी नज़र उस पन्ने पर स्थिर हो गई . बीस साल पहले उसकी इस कहानी 'कृष्णवेणी'को उसके परोसी श्रीकांत सर ने प्रकाशित होने के लिए भेज दिया था .जिस दिन कहानी किताब में छपी श्रीकांत सर किताब ले कर उसके पास आए वह आँगन बहार रही थी .उनको देखते ही वह ठिठक गई और हाथ ज़ोर कर प्रणाम किया उन्होने आशीर्वाद देते हुए बोले मोहिनी बेटा तुम बहुत अच्छा लिखती हो चाहे कुछ हो जाए तुम लिखना मत बंद करना एक दिन तुम शिखर तक पहुँचोगी और हाथ में किताब देते हुए बोले इसमे तुम्हारी कहानी छपी हैन.इत्न सुनते ही उसकी आँख सजल हो गई उसने झट से श्रीकांत सर का चरण स्पर्श कर अपने माथे में हाथ लगा लिया..श्रीकांत सर उसके सिर पर हाथ रखते हुए बोले बेटी लछामी,सरस्वती माँ की रूप होती हैं वा पूजनीय होती हैं अब फिर कभी पैर मत . कितना भाव - विभोर हो गई थी और सोचने लगी काश सभी मर्दो के मन में औरत के प्रति ऐसी श्रधा होती.

वह अतीत में खोते चली गई कितने चेहरे आँखो के सामने चलचित्र की तरह घूमने लगी माँ,बाबूजी, चाचा-चचि.बैय-दीदी. और छोटे-छोटे चचेरे भाई-बहन जो अपनो से भी ज़्यादा प्यारे उन्हे चचेरा बोलना सही नही होग.उन सब में सब से प्यारी मा जिसमे उसका सारा जन्नत दिखता था . साँवली स्लोनी माँ के माथे पर लाल गोल बिंदी सूरज की तरह हमेशा दमकता रहता थ.पुरनि सूती सारी को भी इतने करीने से पहनती थी की उनकी गरिमा और बढ़ जाती थी . सारे घर-परिवार को समेट कर एक ही बंधन प्यार के बंधन में रखती थी .सब दुखों को विषपान कर हमेशा मुस्कुराते रहती थी. हर दुख में भी खुशी को ढूँढ लेती थी . बाबूजी के गुस्से को चुपचाप सह लेती ंगार कभी प्रतिवाद नही करती थी . उस पल को याद करते ही मोहिनी का मन आक्रोश से भर उठा. वह अभी भी समझ नही पाई माँ सब कुछ क्यूँ सहती थी

मोहिनी जब भी सुबह माँ को देखती तो उसे लगता माँ के पैर में पहिया लगा हो --कितनी तेजी से एक साथ कितना काम कर डालती थी। बाबूजी को पान लगा कर देना कभी चाय बना कर देना और गैस पर चढ़े सब्जी में मसाला डालती तो कभी तवे पर झट से पराठा बेल कर डाल देती थी.... वह माँ के चेहरा को देखते रह जाती थी --अचानक वह सहम कर कोने में दुबक जाती फिर बाबूजी ने नाश्ता का थाली बरामदा में फेंका और माँ को डांटते हुये चिल्ला रहे थे -'जाहिल औरत समय देखने आता हैं इतनी देर से नाश्ता बना कर लाई हैं 'बाबूजी पैर पटकते हुए घर से निकल गए थे..... वह दौड़ कर माँ से लिपट गई थी--- माँ झट से आंसू पोछ कर बोली -चल लाडो जल्दी से स्कूल के लिए तैयार हो जा -----वह धीरे धीरे असीम वेदना और मन में आक्रोश लिए बाथरूम में चली गई. बाथरूम में जा कर तेज़ी से नल चला कर रोने लगी वह रोते रोते बुदबुदा रही थी माँ

आप इतना क्यूँ सहती हो. उसे अपने बाबूजी से नफ़रत होने लगा था. मोहिनी को याद आया वा दिन रविवार था बाबूजी का छुट्टी थ.वह खाना खा कर तली रखने जा रही थी चावल का एक दाना टेबल पर छूट गया था जब हाथ धो कर बाहर आई तो बाबुह=जी ने पूछा टेबल साफ कर दिया उसने हन में सर हिला दिया बाबूजी क्रोधित हो कर बोले झूठ बोलती हैं और खिचते हुए टेबल के पास ले गये जिस पर चावल का एक दाना गिरा था वह धीरे से स्थिर आवाज़ में बोली ...वा नही देखी थी. मोहिनी मार खा रही थी अपने बाबूजी से मगर उसके आँखों में आँसू ना थे .... उसने अपने शरीर को इतना सख्त कर लिया था की इतने चप्पल खाने के बाद भी वह स्थिर खड़ी थी..... उसकी माँ ने प्रतिवाद करते हुए बाबूजी को बोली -बेटी को मार दोगे ---इतना सुनना था की मोहिनी के बाबूजी दहारते हुए पत्नी को बोले चुप कर बेहूदी जुबान चलाती हैं....और अचानक फफक-फफक कर मोहिनी रोने लगी..... उसे बहुत तकलीफ हो रही थी ...अनगिनत चप्पलों के मार से नहीं ... उसकी माँ को अपमान बाबूजी ने उसके वजह से किया था.

मोहिनी को बाबूजी के उपर भी प्यार आ जाता था . सुबह सात बजे घर से निकल जाते और रात ९ बजे घर लौटते थे. परिवारिक ज़िम्मेदारी अधिक होने से दो जगाह काम करते थे रात को काफ़ी थके होते थे और जब वा आते तब तक वह सो जाती थी .बाबूजी काम के अधिकता और परिवारिक बोझ को ढोते ढोते तक जाते थे और शायद इसी वजह से अपना सारा गुस्सा माँ और भाई-बहन पर उतार देते थे. कभी-कभी बिना वजह मान को डाँटते तो वह मान से बोलती थी आप क्यूँ नही ज्वाब देती हैं बाबूजी आपको नही मानते ....तब माँ उसे गले ल्गा कर बोलती 'धुत पगली बाबूजी हम सब को बहुत मानते हैं बस ज़्यादा काम करने से परेशन हो जाते हैं'.माँ की बातों को हन में सर हिला देती थी मगर उसका अंतर्मन नही मानता था .माँ सबसे अंतिम में खाना खाती थी. उनको खाते देख सब भाई-बहन को लगता कितना स्वादिष्ट व्यंजन खा रही हो अपने तरफ देखते सब भाई बहन को अपना खाना खिला देती थी ......आज तक वैसा तृप्ति उसे खाने में नही मिला . समय कब किसके लिए रुकता हैं ....मोहिनी बि.ए में चली गई थी अब वह भी माँ के कामो में मदद करने लगी थी बाबूजी का गुस्सा थोरा कम हो गया था . बाबूजी का पान लगाना ,चाय बनाना , कपरो में आयरन करना अब वह खुद कर

देती थी . एक दिन माँ को बाबूजी से बोल रही थी ....मोहिनी के लिए रिश्ते देखना शुरू कर दीजिए बाबूजी ने हूँ कह कर चुप हो गये. आज भी मोहिनी को उस दिन का घटना याद आते मन कसेला हो जाता हैं आख़िर उसने ऐसा क्या जुर्म किया था जिससे बाबूजी उसके कॉपी को चिथरे-चिथरे कर दिए थे . वह अपनी पुरानी कॉपी में कहानी-कविता लिखा करती थी सब से छुपा

कर रखती थी उस दिन खाली समय में कविता लिख रही थी बाबूजी ऑफिस से जल्दी घर आ गये थे उसे पता नही था अचानक उसके हाथ से कॉपी छिन लिए वह हर बरा गई बाबूजी को सामने देख थर-थरने लगी बाबूजी आग्नेय दृष्टि से उसे देखें और कॉपी पर एक नज़र डाले और क्रोध से फार दिए वह हतप्रभ हो कर देखते रह गई थी . घर में ऐसे सब देख रहे थे उसे जैसे उसने कोई प्रेम पत्र लिखा हो . रात में वह सोई-सोई रो रही थी माँ ने सर पर हाथ रख कर बोली मत रो बेटा एक दिन तुम बहुत बरी लेखिका बनेगी . वा झट से अपना सर माँ के गोद में रखकर शांति से सो गई. दूसरे दिनबाबूजी माँ को बोले की उनके दोस्त ने एक रिश्ता बताया हैं लरका बैंक में हैं दो बहन हैं माता-पिता हैं . माँ उसे बताती रही मोहिनी चुपचाप सुनती रही उसने कोई उत्तर नही दिया और दो महीना बाद उसकी शादी हो गई थी.

मोहिनी की जिंदगी यहन और भी बदतर हो गई थी . एक ख़ौफ़ उसके मन में बस गया था .कोई भी कम में सास-ननद को गलती निकालने की आदत थी उपर से पति के आने पर उसकी शिकायत करती थी और उसका नपुंश्क पति बिना उसकी बात सुने पीटने लगता था और रात के अंधेरे में उसके साथ बलात्कार करता था .कोहिनी के आसू सुख गये थे वा सोचती रहती थी की वह प्रतिवाद क्यूँ नही करती ंगार फिर सोचती प्रतिवाद करके जाएगी किधर मायका वहाँ जहाँ उसकी माँ हर दिन मरती जीती हैं . उसने अपने साथ कुछ किताब और पुरानी कॉपी लाई थी जब भी फ़ुर्सत मिलता वा कहानी लिखने लगती थी अपने मान की वेदना को कहानी के मध्यम से उतारती थी . उसके जिंदगी में देवदूत बन कर आए श्रीकांत सर उसके परोसी थे .जब भी उसके घर आते वा चाय दें कर प्रणाम करती वा कातर दृष्टि से उसे देखते और सर पर हाथ राक कर खुश रहने को बोलते थे . एक दिन घर पर कोई नही था श्रीकांत सर घर आए घर पर किसी को ना देख वो जाने लगे तभी मोहिनी ने अपना कॉपी देते हुए बोली थी -'सर ये कुछ कहानी लिखी हूँ कैसा हैं पढ़ कर बताए' सर ने खुश हो कर बोले-- बहुत अच्छा बेटी और कॉपी ले कर घर चले गये थे.उस दिन शाम को पूरी टालते वक़्त उसके हाथ जल गये थे वह जलन से कराह उठी थी और उसकी सास उसे कोस रही थी की कैसी बेलूरी हैं माँ ने कुछ सीखा कर भेजा नही हैं......और ये जलन हाथ के जलन से बढ़ कर लगी थी . मोहिनी की आँखें छलछला गई थी...... कितना भयावाह वा मंज़र था उसे घसित घसित कर उसका पति मार रा था और बोले जा रहा था .... कब से उस हरामी {श्रीकांत सर} से यारी हैं बता और बाहर उसकी सास चिल्ला चिल्ला कर सब को बोल रही थी ......उसकी बहू के साथ प्रेमलीला रचा रहा था श्रीकांत और श्रीकांत सर घर में बैठे अपने दोनो हाथ से कान बंद किए हुए थे उनके आँखो से आसू बह रहे थे उन्होने कोई प्रतिवाद नही किया वो जानते थे प्रतिवाद करने से मोहिनी और मार खाएगी और उनकी फ़ज़ीहत होगी .दूसरे दिन मोहिनी बाहर बाल्टी ले कर निकली उसे देखते ही श्रीकांत सर एक कागज मोर कर

चहारदीवार पर रख कर चले गये. मोहिनी ने सब से नज़र बचा कर कागज ले ली ओए बाथरूम में जा कर पढ़ने लगी थी .....श्रीकांत सर शहर छोर कर जा रहे थे और उन्हे बहुत दुख लगा की बेटी के समान मोहिनी को लेकर उनपर लांछन ल्गया गया था ....उन्होने मोहिनी को लिखा था की अपनी लेखनी को कभी मत बंद करना इस में से जो आग निकलेगी उससे उसकी नई जिंदगी का निर्माण होगा और अपने लिए प्रतिवाद करना सीखो आख़िर कब तक चुप रहोगी ......मोहिनी की आँखे भींग गई उसने जल्दी से कागज को फार कर पानी में बहा दिया था . श्रीकांत सर चले गये हमेशा के लिए और उसके भीतर उम्मीद की एक रोशनी जला गये. मोहिनी एक दिन अख़बार में जूनियर टीचर की आवश्यकता को देखी उसने उस इस्तिहार को काट कर रख ली बेटी[तुहिणा] को स्कूल छोरते हुए उसने स्टेशन से फॉर्म को करिद कर ले आई और दूसरे दिन उसे भर कर पोस्ट कर दी थी .आख़िर उस दिन रजिस्ट्री आया जिसमे उसका नियुक्ति का आवेदन पत्र आया था. सास ने उस पत्र को अपने पास रख लिया और बेटा को आते उसके हाथ में दे दी उसका पति पत्र को दिखाते हुए पूछा था.......ये सब क्या हैं और वो जैसे ही बोलने जा रही थी उसके गाल पर एक झन्नाटेदार थप्पर परा ....मोहिनी की आँखों में आग सुलगने लगी पति को देख कर बोली थी .....दिख नही रहा क्या हैं और मैं जा रही हूँ शहर छोर कर काम करने मोहिनी की बातों से उसका पति बौखला गया गली देते हुए बोला भागो यहाँ से और साथ में अपनी बेटी को भी लेती जतेरी बेटी तेरे जैसी ही निकलेगी. मोहिनी अपनी बेटी का हाथ मजबूती से थमा और उसी रात अपना पति का घर त्याग दिया था. किसी तरह गुजर-बसर करती मोहिनी घर पर भी बच्चों को पढ़ाने लगी और साथ में तुहिणा का भी विशेष ख्याल रखती थी .

तुहिणा बहुत होनहार थी पढ़ने में उसे स्कूल से स्कॉलरशिप भी मिलता था .मोहिनी लिखना जारी रखी थी कितनी कहानी किताब में छपने लगी थी . तुहिणा डॉक्टरी पास कर गई थी और अस्पताल में नौकरी भी मिल गयी थि.जिस दिन तुहिणा को नौकरी मिली उसे आंतरिक खुशी मिली थी . आज उसे जीने का मकसद सार्थक नज़र आया. अपने प्रशंसंको के पत्र में एक पत्र को खोलते ही वह ठिठक गई उसके आँखो से आसू बहने लगे ......ये पत्र श्रीकांत सर के थे जो उसकी नई कहानी के लिए बधाई भेजे थे और आशीर्वाद का साथ लिखे थे......उन्हे खुशी हुई की उस आग से उसकी जिंदगी ताप कर सोने के समान निखर गया..उसने पत्र को सर से लगा लिया था और तुरंत श्रीकांत सर को पत्र लिखी और उन्हे अपने घर आने को लिखा. मोहिनी किताब लिए कब तक सोचती रही उसकी तंद्रा टूटी उसने सोफे से उठ कर पानी पी और और एक दृढ़ मुस्कान होठों पर लाती हुई बुदबुदाई हिम्मत ना हारो .....ऐकला चलो रे.